

पात्र-परिचय

पुरुष

- १ हेमंत ... हिमवान्, गौरीक पिता, पर्वतराज ।
- २ दिगम्बर ... शूलपाणि, शंकर, शिव, गौरीक वर ।
- ३ नारद ... ऋषि, घटक ।
- ४ ब्रह्मा ... विधाता ।
- ५ हरि ... विष्णु ।
- ६ मदन ... कामदेव ।



स्त्री

- १ भनाइनि ... मएना, गौरीक माय ।
- २ गौरी ... हिमालयक पुत्री, कन्या, नायिका ।
- ३ रति ... कामदेवक स्त्री ।
- ४ नोना ... योगिनी, वशीकरण मे पटु ।



शिववत् कृत

गौरीप्रणय-नाटक

वन्दो^१ वारिज^२ - चरणयुग मंगल-करण गणेश ।
विषम हुरन कए शरण देहु, लम्बोदर विषमेश^३ ॥
एकरदन^४ गजवदन महाप्रभु, मदजल चुअत कपोल ।
अनरन-सरन सकल भय सुनिअ, दुखनाशन एकबोल ॥
अतिगुनमय सत-मुखवायक, गिरिजा-नन्दन नाम ।
गुअ पद सेवि^५ विघ्न-मन आकुल, कतहु न भेटए ठाम ॥
विघ्न निवारि^६ तोरित^७ मन पुरहु, दुखमोचन सुखधाम ।
शिवदत्त अन गुअ सरनागत पुरहु हमर मनकाम ॥१॥

हेमत^८ मनाइनि^९ आदि भवानि ।
ब्रह्मा हरि नारद सुलशनि ॥
नृपति मदन^{१०} बन देत परवेश ।
रति आउति निज पतिक उवेश ॥
आउति योमनि नोना नाम ।
जनिकर जेग विहित सभ ठाम ॥

टिप्पणी

१—वन्दना करत छी । २—वारिज चरण युग—चरण कमलद्वय ।
३—विघ्नक ईश (पति) । ४—एकरदन (गणेश), एक दाँत वाला ।
५—सेवा कयनिहारक विघ्नक मन विकल होइल । तेँ विघ्नेश अहाँक नाम
भिक । ६—हटाए । ७—स्वरित=शीघ्र ।

८—हिमालय । ९—मएना, पार्ष्णीक माय । १०—कामदेव ।

१—'विघ्नमन'—छपलहु पोथी मे । 'पक्षेवि विघ्न'—मूल पोथी ।

शिववत्त हर हरह कलेश ।
एहि नाटक एतया परवेश ॥२॥

हेमगिरि-राजकुमारि^१ तपोवन, देखए चलील तपु आजे ।
कए परिहास मधुर धुनि मञ्जल, सविमान गाय समाजे ॥
अम्बर^२ ललित बलित^३ सभ भूषण, भगव^४ लतावला मूले ।
रहसि^५ किरशि गोरि सगर तपोवन, निज कर तोड़इत फूले ॥
एहि अवसर गोरि देखल दिगम्बर, बाढ़ल मन अनुरागे ।
सुदिन अपन घर हम सखि छोड़ल घम्य हमर धिक भागे ॥
कर जोड़ि २ विनति सखीसौ गिरिजा, कहए लागलि पुनु आजे ।
शिववत्त भन पुरह सद्य भय, राखु सरन केर लाजे ॥३॥

देखल तपोवन, पुलक पुरल मन हे ।
आहे सखि, बाढ़ल शिवक मनेह,
*गेह नहि जाएव हे ॥
धिका विभुवनपति, उचित हमर पति हे ।
आहे सखि^४ हम नहि छोड़्य समाज,
आज सखि हिनकर हे ॥
शिव भए परसन, जखन पुरत मन हे ।
आहे सखि^५, ता लगि घरव खेआन,
आन नहि मन पर हे ॥

१—गार्गीती । २—कपड़ा । ३—शोभित । ४—लक्ष्मी सम्भक्त तर ओ
बाड़ि लग घुमेत छथि । ५—एकान्त मे ।
६—आनन्दे । ७—घर (गाम पर) ।

१ - न सातल । २ - विनती ।

४, ५ - ०० (अभाव ।)

सुन्दर तरङ्ग, लेख^६ जटामह^७ गङ्ग देखु हे ।
आहे सखि, सति^८ शिव-तिलक धिराज
साज सखि देखहु हे ॥
तीनि नयन हर, पाँच वदन वर हे ।
आहे सखि, कण्डमाल वनछाल,
*आल उर ऊपर हे ॥
बसह^९ चढ़ल हर, त्रिमुल बहिन कर हे ।
आहे सखि, हेरदत हरल गेआन,
खेआन^{१०} मन लागल हे ॥
शिववत्त भन, तोरित^{११} पुरह मन हे ।
आने माइ, गौरि-सहित-मुलपानि
आनि सरनागत हे ॥४॥

जाय अपन निज वास, सबहि सौ कह्य हे ।
छोड़व न सङ्कर पास, एतहि हम रह्य हे ॥
अप-तप करए समाज, प्रेम हम लाओव हे ।
सङ्कर-चरन मनाय, उचित पहु पाओव हे ॥
तात^{१२} भवन सखि जाय, सबहु इह भाख्य हे ।
बिसरि चलिअ जनु मोहि, सदा मन राख्य हे ॥
कतोक चलील सखि गेह, नेह^{१३} गोरि मन बरि^{१४} हे ।
कतोक रहलि सखि पास, सकल मुख १४ परिहरि हे ॥
शिववत्त^{१५} पद आन, विनति इह कर जोड़ि हे ।
आनि अपन निज दास, तोरित मन पूरिअ हे ॥५॥

६ - जटा मे गङ्गा । ७ - चन्द्रमा । ८ - छाती पर साँप । ९ - बसहा
पर ।

१२ - पितृ-पद । १३ - स्नेह । १४ - त्यागिकए ।

६ - देखु । ७ - हसर ।

८ - पथि । ९ - शिववत्त ।

आसन गोरि^{११} मृगछाल बनाओल, हथडमाल १६कर लाव हे ।
अतुलि^{१२} भवति कय चरन अराधल, अहोनिशि^{१३} च्यान लगाव हे ।
अति सुकुमारि कठिन प्रत साधल, कय एक पवन^{१४} अहार हे ।
एहि विधि^{१५} राजकुमारि तपोवन, बीतल घरल हजार हे ।
आक धुधुर फुल नखदल धीफल, पुजन चरन करि प्रेम हे ।
अनर गुगुल धुप अक्षत चढ़ाओल, जोग युमृति अति^{१६} नेम हे ।
२२ अहोनिशि जप-बप देखि सदाशिव, धएल जटिल तब भेष हे ।
शिवदत्त^{१०} अत गोरि वर कारन, आएल निकट गहेस हे । ॥६॥

भेष^{११} बदलि शिव आजे ।
आएल गोरिक समाजे ।।
एतेक करिअ कथिलाई ।
के मोहि कहिअ बुझाई ।।
अति सुन्दरि तोहि देखी ।
कुल मुल^{१३} कहिअ विशेयी^{१४} ।।
वचन बोलि मुमुकाने ।
शिवदत्त पद भाने ॥७॥

अति तपसी मन जानी ।
बालिल वचन भवानी ।।
२५ हेम - गिरिराज - किसोरी ।
नाम हमर थिक गोरौ ॥

१४ - गोरौ । १५ - हाथ मे । १७ - अमुलि - अनुपम । १८ - दिन राति ।
१९ - हवा लाय के । २० - एहि प्रकारे । २१ - अत्यन्त विधानपूर्वक ।
२२ - दिन-राति ।
२३ - मैथिल-ब्रह्मणक हेतु पञ्जीशास्त्रक अनुसारे सुलग्न ।
२४ - विशेषरूपे । २५ - पर्वतराज हिमालयक पुत्री ।

। १० - शिवदत्त । ११ - भेष ।

जप करि अहोनिशि^{११} जागी ।
२२ सङ्कर वर मन लागी ॥
ते हम धरिअ घेआने ।
शिवदत्त पद भाने ॥८॥

अति सुकुमारि^{१२} राजगिरि-कुमारि, एतेक करहु कथिलागी ।
निरघन बूढ़, गूढ़ सब दोखन^{१३} कोत गुन शिव^{१४} अनुरानी ।।
त्रिधि^{१५} सुरवलि^{१६} हरि ई सभ परिहरि^{१७}, जतय पुरत सभ भोगे ।
२३ भसम भुवन^{१८}, सममान फिरथि हर, ई वर नहि तुअ जोगे ।।
आक धुधुर फुल भांग^{१९} गारल रस, भोजन अहोनिशि जाही ।
बूढ़ बड़द असवार दिगम्बर, की देखि घरलहु ताही ।।
परिजन हिनक भूतगण अनुचर, कथिलय घरहु घेआने ।
२५ हेमगिरि कुमारि^{१४} चरन शरन धरि, शिवदत्त पद भाने ॥९॥

थिक थिक^{१५} थिक सखि ! तोहर पेआने ।
एतेक गारि सुनैलिअ काने ॥
सुनि मन होइछ परम^{१६} अनुतापे ।
एत निन्दा सुनने अति पापे ॥
उतकट वचन सखी नहि नोक ।
के जन कतय बस, केवहु थीक^{१७} ।।

२६ - दिनराति । २७ - सङ्कर ।

२८ - गोरौ । २९ - सब दोषों युक्त ओ रहस्यमय । ३० - ब्रह्मा । ३१ - इन्द्र
की विष्णु । ३२ - छोटिकय । ३३ - भसम हिनक आभूषण थिक । ३४ - विप ।
३५ - हिमालयक पुत्री ।

३६ - दुःख ।

१२ - शीव । १३ - भुवन । १४ - कुमारि ।

१५ - ० । १६ - थिक ।

परम रोहित^{१७} गोरि सखि^{१७}-मुख हेरि ।
 सभ मिल कहिअ जाओ गृह फेरि ॥
 अनुचित बचन सुनि^{१८} मन वाम^{१८} ।
 उचित मोहि परितेजिअ^{१९} ठाम ॥
 प्रेमक बचन सुनल शिव कान ।
 मन मुनि^{१९} शीववत्त पद भान ॥१९॥
 भगट भेल गोरि - निकट जाय ।
 देल सदाशिव प्रेम बड़ाय ॥
 कहल महादेव सुनह भवानि ।
 तङ्कुर नाम हमर जग^{२०} जनि ॥
 करब विवाह पुरब मनकाम ।
 अब गोरि उठह जाह निज घाम ॥
 २० शीववत्त सरनागत गोर ।
 तोरित मनोरथ^{२१} पुरह मोर ॥२१॥
 देखल चरन हर, ओ ओ रे, जब गोरि^{२२} ।
 जप तब सकल पुरल गोरि^{२३} ॥
 पुलक^{२४} पुरल मन, ओ ओ-रे, देखि हर ।
 सखि संग चकलि अपत धर ॥
 उमग प्रेममग^{२५}, ओ ओ-रे, बाहुल ।
 तोरित^{२६} तपोबल छाहुल ॥
 शिवदत्त कवि, ओ ओ रे, पद भन ।
 तोरित पुरह शिव मोर मन ॥२२॥

३७—समसाय । ३८—विपरीत । ३९—छोड़ि दिय । ४०—संसार मे ।
 ४१—आनन्दे । ४२—प्रेममग्न । ४३—शीघ्र ।

१७—सखी । १८—सुनि । १९—शिववत्त २०—शिव । २१—पुरह । २२—गोरी ।
 २३—मोरी ।

नर दय आदि भवानि सदाशिव, जाय तपोवन जाय ।
 शरि^{२४} बचम्बर बैसल दिगम्बर, अहोनिशि ध्यान लगाय ॥
 कठिन जोग धरि, बैसल सदाशिव, रुण्डमाल^{२५} कर लाय ।
 मुण्डमाल उर^{२६} ध्याल^{२७} विराजित, २४तनु म^{२८} ॥२३॥

देवासुर^{२९} संग्राम होएत गए, ताहि जुगत^{३०} जन भीर हे ।
 से सभ मिल अवतार धरत गए, सहिमण्डल भए थीर हे ॥
 हथ^{३१} हाथी हथिआर सहित देखि महि^{३२} सहि सकत न भार हे ।
 धरतीक भार हरय हम जायब, मधरा लेब अवतार हे ॥
 कुण्डिनपुर नृप पाय भीषमदेव, नगर परम अनुपाम हे ।
 तसु कन्या कमला^{३३} अवतरतिहि, रुकुमिनि होएत तसु नाम हे ॥
 लगपति^{३४} पडि संवर^{३५} हम जीतब, तखन करब विवाह हे ।
 तसु बालक मनमथ^{३६} अवतरताह, तनितह रतिक निवाह हे ॥
 ई सभ सकल मदन जब ब्रुलल, मन कयल दिह ज्ञान हे ।
 शङ्कर पास चलल नृप मनमथ, शीवदत्त पद भान हे ॥२४॥

चलल मदन^{३७} दल साजि ना ।
 तनु^{३८} तनु मदन विराजि ना ॥
 ३९—निरसी^{३९} मीलल नीर ना ।
 मोहित भेल समीर^{४०} ना ॥

२४—बाघक छालरुपी बन्ध विछाय । २५—रुण्डाक्षक माला ।

२६—छाती पर । २७—साँप ।

२८—पुछ करत । २९—घोड़ा । ३०—पृथ्वी । ३१—लक्ष्मीभए । ३२—गहड़ । ३३—

सन्धर्वर, सम्भर । ३४—कामदेव ।

३५—कामदेव । ३६—प्रतिदेह मे । ३७—जल सँ । ३८—बायु । ३९—वृक्ष ।

२४—एतयत्त भीत संख्या १७ धरि मूल पोथी मे नहि अछि ।

३१—ई गीत छपलहा पोथी मे नहि छल ।

तब^{२२} तब भेल संयोग ना ।
 पबु मन बाहुल भोग ना ॥
 रहल न कोइ जग धीर ना ।
 सभ मन^{२३} मनमथ पीड़^{२६} ना ॥
 अमर^{२४} समर^{२५} नहि चैन ना ।
 बाहुल सभ मन^{२६} चैन ना ।
 मुनिगण छोड़ल बेआन ना ।
 शिवदत्त पद भान ना ॥१६॥

नृप मदन^{२७} जग देल^{२८} परवेश ।
 कठिन^{२७} तब जहाँ कएल महेश ॥
 बान^{२९} कामान फूल कर सोभ ।
 देखि मुर-मुनि-मन उपजल लोभ ॥
 मदन चलैत बह सिताल^{२८} समीर ।
 उमग भरल पबु, भूतक शरीर ॥
 सञ्जु हृदय मदन शर लागि ।
 तैयार नैन^{३०} हर उधेरल आगि ॥
 बान लगैत तन^{३१} उपजल पीड़ ।
 बहून कएल हर मदन शरीर ॥
 मन गुनि कवि शिवदत्त पद भान ।
 टूटल अब शिवशङ्कर ध्यान ॥१७॥

२३ - कामदेव । २४ - देवता । २५ - मरणशील मनुष्य । २६ - मदन (कामदेव)

२७ - कामदेव । २८ - प्रवेश । २९ - बान ओ धनुषक रूप में फूल । ३० - तयन (आँख) । ३१ - शरीर में ।

२५ - निरसी । २६ - पीड़ा ।

२७ - कठिन । २८ - शीतल ।

मन तहि रहल अधीन^{३२} मदन-वस टूटल शिवक समाधि ।
 मन मनमथ^{३३} अति जागल, की फल जोग बराधि ॥
 छन छन सुबुध मुगुध मन, बंसल अहोनिशि जागि ।
 कोन तब तह धनि पाओव, बिकल ताहि मन लागि ॥
 भोजन हीन^{३४} सकल शिव छोड़ल, बिरह परम दुख देल ।
 रहत चैन न सैन, मन बाहुल, एहन सदाशिव भेल ॥
 हरि आएल संग सहित विधाता, मुगुध^{३५} महादेव पास ।
 शिवदत्त भन हर सरनागत, पुरह हमर मन आस ॥१८॥

कहय लागल हर, हरि^{३६} अनुमानि ।
 हरि हरि कोन परि पाओव भवानि ॥
 मन तहि चैन होएत मो^{३७} ताव^{३८} ।
 गौरिक वदन देखए नहि जाव^{३९} ॥
 देव सकल मित्रि कर परिहास ।
 की फल मन कय एतेक उदास ॥
 भल हर भल शिव भल बेवहार ।
 जप तब दुरि गेल मदन बिकार ॥
 काय परिहास बोलल हरि बानी ।
 *दिह मन करिअ मुनिअ सुलपाणी^{४०} ॥
 नारद मुनि बजाविअ आजि ।
 तोरित पठाविअ हेमत रामाजे ॥
 हरिक वचन शिव सुनल काने ।
 मन गुनि शिवदत्त पद भाने ॥१९॥

सुमरल सखन वचन हर मुनि ।

तोरित बोलायल^{४०} नारद मुनि ॥

३२ - कामदेवक वश । ३३ - कामदेव । ३४ - शयन । ३५ - मुग्ध (आश्चर्यित) ।

३६ - विष्णुके । ३७ - हमरा । ३८ - तावत् । ३९ - यावत् । ४० - दुःख (द्विष) ।

४१ - सुलपाणि (महादेव) ।

४० - ओ लागल ।

आए महामुनि देल परवेश ।
 पथ हेरइते^{३२} जहाँ बौसल महेश ॥
 आसन देल सिंहासन लाय ।
 निअ कर पाओ पखारल आय ॥
 अति लादर कय प्रेम बढाय ।
 निअ अभिमत शिव कहल बुझाय ॥
 मदन^{३३} पराभव कहइत लाजे ।
 जाह तोरित मुनि हेमत^{३४} समाजे ॥
 हेमगिरि-कूमरि गौरी भवानि ।
 तोरित मांनि देहु मोहि आनि ॥
 मुनल वचन मुनि कएल *पमान ।
 मन गुनि जीवदत्ता पद भान ॥२९॥
 आकुलि भय देल *इति परवेश ।
 रोदन करय शिर फूजल केश ॥
 कहु कहु शङ्कर कि कएल से तोर ।
 विनु दोख *नाह हरन भेल मोर ॥
 कोन परि जनम वितत शिव मोर ।
 तोह किए जेडाह निपट^{३५} कठोर ॥
 रोदन मुनि कटोइ गरुड़ नामि^{३६} ॥
 धैरज बय रहू मिलत सोआमि^{३७} ॥
 स्कुमिति कोखि^{३८} अवसरत तोर नाह ।
 तन्हितह होएत तोहर निरवाह ॥
 जीवदत्ता हरि परसन^{३९} भेल ।
 धैरज बहुत रानी के^{४०} देल ॥३०॥

३२—तकैत । ३३—अपना हाथे । ३४—एएर । ३५—कामदेवक विपत्ति ।

३६—हिमलयक ओहिठाम । ३७—प्रस्थान ।

३८—कामदेवक स्त्री । ३९—स्वामी । ४०—आश्वर । ४१—विष्णु । ४२—स्वामी । ४३—कोखि=कुक्षि=पेट । ४४—प्रस्थान ।

१—अति आकुलि भय रति । २—निपटक रचो ।

तोरित निकट घटक मुनि गेल ।
 हेमत समादर बैसक देल ॥
 नारद परम समादर जानि ।
 ससन महामुनि बिरचलि वानि ॥
 मोहि महादेव भेजल वाज ।
 तै^{३१} रिषि^{३२} अएलहु^{३३} तोहर समाज त
 मुअ नन्दिनि^{३४} घर आदि भवानि ।
 करत विवाह देव सुलपानि^{३५} ॥
 गौरिक भाग परम कय जानि ॥
 *दिह मन करिअ कहिअ मोहि वानि ॥
 त्रिभुवनपति^{३६} शिव के नहि जान,
 गौरिवर एहन दोसस नहि आन ॥
 *रिषि ! तप एहन कहल नहि जाय,
 *अकलेश *वपगत एहन जमाय ॥
 हाथ धरिअ मोर करिअ न आन,
 जानक वचन मुनिअ नहि कान ॥
 लागल कहए हेमत रिषि वानी,
 जीवदत्ता भन मन अनुमानी ॥३१॥

शिव-मन भेल अनुराग, भाग के जानल ।
 मुनि मन परम हुलास, वचन रिखि मानल ॥
 गौरि तपोवन जाय, कठिन व्रत साधल ।
 त्रिभुवनपति शिव जानि, भवानि अराधल ॥

३१—पुत्री । ३२—शूलपाणि (महादेव) । ३३—दृढ़ (स्थिर) ।

३४—राजपि हिमालय । ३५—विनु बलेशहि । ३६—प्राप्त ।

३१—रिषि ऐलहु ।

३२—त्रिभुवन ।

दम्न हम रिखि कि गीरि चरन शिव^{१६} देखती ।
जनम जीवन ततलाल, सुफल बंध लेखती ।
करव गीरिवर सज्जर, ई मन कएल ।
घटवा भेल सभ थीर, हाथ अलि छएल ॥
नारद कएल पयात^{१७} तोरित उठि तहिवन ।
शिवदत्त पद भान, पुरहु शिव मोर मन ॥३९॥

नारद घटक निकट चल आव ।
परमत^{३३} कय मन कहए जो आव ॥
अधि हेमत घर कया कुमारि ।
रामशि दिहु^{३४} भेल वर अतिपुरारि ॥
सज्जर मुनल मुनिक जब बात ।
तहिवन साजल हर धरिनाथ ॥
३५ शिवदत्त भन गुमरि भवानि ।
वेहु सरन सरनागत जानि ॥३९॥

^{१६}हरषि हर वरिआत साजल भूत, दानव डाट रे ।
^{१७}काल-काल ^{१८}काल साजल चलत पाव तहि वाट रे ॥
हण्ड-मुण्ड तनु भसम राखि वसन^{१९} बाघहि छाल रे ॥
वरद बिठि असवार सज्जर बाजन बाजत गाल रे ॥

३१—शिवक चरण । ३२—प्रस्थान । ३३—स्वियर ।
३४—प्रसन्न भए । ३५—सापक समूह । ३६—भयङ्कर । ३७—वश्य ।
१—तोरित पहुहु गए रिखि सओ वाड । ओतहु साजय आव हर वरिआत ।
शिवदत्त भन गुमरि भवानि । गीरि उचित वर देल सुलपानि ॥
—(गीरीसंवर) ।

३३ - परत के । ३४ - तृपुरारि । ३५ - शिवदत्त ।

चन्द्रविलक ललाट सुन्दर वदन सभे तिति आखि रे ।
नगर निकट वरिआत लागल वैगलि सखिजन आखि रे ॥
शिवदत्त^१ भन चरन मन दय छवि वर^{३६} के पार रे ।
सेस-नागहु काँ^{३७} कठिन शित, जेहो^{३८} मुखक हजार रे ॥३९॥

हरन भेल सखि ! हेमत मेआव ।
आजल निरधन पुन्य पुरान ॥
एहि जग वर की भेटल न आन ।
देखिते^{३९} मनाइति तबति परान ॥
गीरि हमर छवि अति सुकुमारि ।
तनिकाँ एहन वर तपसि भिखारि ॥
हर वरिआत कहए के पार ।
किहु^{३९} लिखल १ विहि गीरि कपाश ॥
मन गुनि शिवदत्त^{४०} पद भान ।
हर प मेधवर के नहि जान ॥३९॥

हर वरिआत दोआर जब लागल देखल हेमत अहि-रानी ।
जोवन जनम अपन परिजन मन, सकल अकारव^{४१} जानी ॥
नृपति विवेक बुनल हुग तहिवन, लपलाह तपसि भिखारी ।
बुड़ दिगम्बर के कर एहन वर हमे परे एक बुलारी ॥

१—शिवदत्त भन चरन मन दय इहओ वानी गाव रे ।
ओहन जान न क्षरित जगमे, हर वर भागहि पाव रे ॥

—गीरीसंवर ।

३६—नयना (हिमाकृत पत्नी) । ३७—विषि (ब्रह्मा) । ३८—नयना गीरीक
गाय) । ३९—वर्ष ।

१—भन सम्पति मध भसमक छोरि ।
कोन पति जनम समाडति गादि ॥ —गीरीसंवर । (अधिक) ।
३६ - परत के । ३७ - नाग काँ वरन कठिन । ३८ - जो मुख थिक ।
३९—कीहु । ४०—शिवदत्त ।

गौरि १कओरि४। सम्भारत की लय, की देत भोजन ताहि ।
सुमरि २नीर भरि आओत लोचन, अब हम होएव बताहि ॥
शिवदत्त४२ भन धेरज धर, मन हर वर त्रिभुवन दानी ।
कठिन योग व्रत साधि उचित वर, पाओल आदिभवानी ॥३०॥

हम न करय वर बूढ़ हे राजा ॥धू०॥
तोनि भुवन फिरि वर जोहि३ आनल जाहि दोषन५ सभ गूढ़ ॥
एहि तह उचित मरन मोर सुन्दर कतेक सहस्र मन पीर६ ।
राजकुमारि भिखारि विआहत, सुमरि नैन दूर नीर ॥
देखि नगन वर नगर सगर हँस, की देव उत्तर ताहि ।
हिअ७ मोर साल८ गौरि मुख देखि-देखि, अब हम होएव बताहि ॥
अति सुन्दर हम करब गौरि वर, पुछल मनोरथ मोर ।
सबतह तारि विचारि करए वर, तोह किए भेलाह कठोर ॥
नव सुन्दर सुकुमार प्रथम वर, करय गौरिवर जोहि ।
से सभ मनोरथ मनहि मगन भेल, क्यों नहि परिजन मोहि ॥
अति सुकुमारि बुलाचि मोहि घर, एक दोसर नहि शोक ।
अति निर्मोह९ तोहि जग कहतहु, किएन कएल वर नीक ॥
जगत अनाथक नाथ सदाशिव, शिवदत्त भन जानि ।
तोरित हमर मन पुरह सदन भय, शङ्कर-सहित भवानि ॥३१॥

मुनिअ मनाइनि कह गिरिराज ।

बड़े तपे पाओल शिवक समाजे ॥

अशरन - शरन अनाथक नाथे ।

से हर परसन, भेलहु सनाथे ॥

१—कोडी । २—जल (नीर) ।

३—ताकि कए (खोजि) । ४—दोष (अवगुण) । ५—दुःख । ६—हृदय । ७—
पीड़ित करैल । ८—निधुर ।

४१ = गौरिक औरि सम्भारत । ४२ = शिववत्स ।

सकल १अमर-पतिदेव २शुलपानी ।
जे देखि वरलन्हि आदिभवानी ॥
जगत - तात३ हर, गौरि जस ४-माय ।
के कह महिमा कहलो न जाय ॥
ई सभ कहि ऋषि शनि बुझावे ।
गौरि उचित वर शङ्कर पावे ॥
शिवदत्त भन वर नहि आने ।
हर परमेश्वर के नहि जाने ॥३२॥

असक५ परलि गिरिरानी ।

मानल वर शुलपानी ॥

तिरहुति - रिति मनमानी ।

बूढ़ वर कर बटु६ जानी ॥

मैथिल लोकिक देशी ।

निश्च७ मन रोख८ उपेखी९ ।

शिवदत्त पद भाने ॥

हर मोर राखहु माने ॥३३॥

परिछए जलल सखीगत ।

फनि-मनि१० जोति वरय तन ॥

छगुति रहलि सखि निश्च मन ।

कोतुक करत भूतगन ॥

कतन११ जतन सखि आवय ।

नाक धरय नहि पावय ॥

७ - देवताक पति । ८ - शुलपाणि (महादेव) । ९ - पिता । १० - देवता ११ -
वच्चा ।

१०—निज (अपन) । १—तामस । ३—उपेक्षा कएल । ४—नागक मणि ।
५—कतेक ।

रुखि चलील रुखि निज घर ।
बोम परि परिछव हर वर ॥
शिवदत्त इहो पद भन ।
तोरित पुरह शिव मोर मन ॥३४॥

हेमगिरि^३ वचन मनाइनि^४, निअ मन मानल ।
गेल सखी बय साथ, नाक छरि आनल ॥
सखिगत माइव^५ धमाय, उखरि लग राखल ।
बैदिक विप्र^६ अनाय, सबहु वेद भाखल ॥
कुटए अठोछर साथ, आठजन आएल ।
कर लय पत्र रत्तालक^७, वारि गुलाएल^८ ॥
दधि अक्षत तसु डारि, पीत सुत आनल ।
दुलहि दुलह कर लाय, कंगन तव वांछल ॥
शिवदत्त पद भान शिवक मन भाओल ।
गौर उचित वर पाय, सखी समुझाओल^{४३} ॥३५॥

चलल कोवर शिवशंकर, गिरिजा^{४४} जहँ बैसलि ।
रोकल सार दोआर, मन्त्रीगत हँसलि ॥
देहु तोरित घर जाय, देखव हुम हे हरि ।
४५सुभ लगन बिति^{४६} जाय, छाड़ि देहु देहरि ।
की विनि देल शिव मोहि, कहल इह गिरिसुत^४ ।
जिनु बेल घर जायव, थिकहु^{४७} ककर पूत ॥

२—हिमालय । ३—मथना । ४—मड़वा (मण्डप) । ५—ब्राह्मण ।
६—आमक । ७—पुस्तकपाल । ८—घरक दोआरि ।

१—
शिवदत्त इहो पद भन ।
कुटए अठोछर भूतगत ॥ -गौरी संवर ।

४३—भोज । ४४—गिरिनगिनि जहाँ । ४५—भूत । ४६—गीति ।

ई सुनि वामुकि नाथ, हरक शिर जागल ।
देखि उर छोड़ल दोआर, हेमत-सुत^१ भागल ॥
शिवदत्त पद भान, आन नहि मोर गति ।
तोरित पुरह मन मोर, देहु वर पधुति ॥३६॥

सखि दस मंगल अलाएल ।
लय कन्या पद झोपल ॥
दुद कुमारि बैसलि घर ।
गौरी घरय चलल हर ॥
अंगुरि गहिअ लेल सञ्चर ।
गौरी नाहि ४७पड़लि कर ॥
गाइनि देखि देखि हँसय ।
कहया इहो वर बसय^२ ॥
हरपित जेल दिगम्बर ।
११पुलकि १३गहल शिव ४८गौरी कर ॥
४९शिवदत्त कवि गाओल ।
५०गौर उचित वर पाओल ॥३७॥

पुलकि^{१३} दिगम्बर, गहि लेल^३ गौर कर हे ।
आगे माइ, गौर लेल अंगुरी लगाय,
चलल शिवशंकर हे^४ ॥

१—मेनाक । १०—मेनाक । ११—आनन्दित भय । १२—पकड़ल ।
१३—प्रसन्न भय ।

१ - (गौरीसंवर सँ दू पाँती लेल गेल ।) २ - अपदेश हर' वर--गौरीसंवर ।
३ - बैल । ४ - (एहि सँ आगू मन्त्री पाँती गौरीसंवरक थिक ।)
४७ - पड़ल । ४८ - गौरी । ४९ - शिवदत्त । ५० - गौरी ।

[पुलकित भेलि तन, जतवे सखिगत हे ।
 आगे माइ अवभूत रूप अनुर,
 सोभए तन हर वर हे ॥
 ब्रह्म वाधरि छाल गले सोभए मुण्डमाल हे ।
 आगे माइ सिर सोभए सुरसरि छार,
 कनि मनि ऊपर हे ॥
 गहि लेल गोरि कर चलल माइव पर हे ।
 आगे माइ शीवदत्त कनि आन,
 ध्यान हर ऊपर हे ॥]
 इण्डमाल १४ कर, चलत जपत हर हे ।
 आगे माइ, झलकत तिलक अपार
 १५वाल-सशि भालक हे म
 डडा शोभ मुज डोरी, भोजन बिष डोरी हे ।
 आगे माइ परिहन मज १६ केर चाम,
 नाम धिक पशुपति हे ॥
 शीवदत्त भन तोरित १७ पुरह मन हे ।
 आगे माइ शिव १८ छोड़ि नति नहि आन
 ध्यान मोर लागल हे ॥३६॥

कहु कहु जंकर की गोत १९ तोर ।
 कनि गोत जएह सएह गोत मोर ॥
 कोन पति होएत तकर निरवाह ।
 १२४मगोत कतहु न होअ विवाह ॥

१४ - सदाक्षक माला । १५ - द्वितीयाक चन्द्रमा कपार परक ।

१६ - हाथी । १७ - शीघ्र । १८ - गोत्र । १९ - समशोष ।

३६ - शिव पुत्र छोड़ि ।

जंकरा वर थिक आप न माय ।
 से कोन गोत तोहि ५२ कहत बुझाय ॥
 महरि सम्मति लय गोत एक भेल ।
 आऊन उपर तखन हर भेल ॥
 शीवदत्त भन मन अनुमानि ।
 देहु बरन धरनागत जानि ॥३६॥
 गुनमान पुरोहित आनल ।
 शरपट वेद बखानल ॥
 तीनि कुष ऋषि ५३ कर लेल ।
 वेद विहित गोरि शिव बेल ॥
 नखि सब मङ्गल गाओल ।
 गोरि उचित वर पाओल ॥
 शीवदत्त इही पद भन ।
 तोरित ५४ पुरह शिव मोर मन ॥४०॥

देवी उपर चलल हर, नहि गोरि कर ।
 कनि ५५ मनि डर २१ लपटाएल, हेसए दिनभर ॥
 नगरसे सखिगण आइलि, बैसलि सभ मन आसि ५६ ।
 सेस नाम सिर जागल, ५७ आजति के हर आसि ॥
 ब्रह्मा पोधी लय कर, भाखलि वेद विधान ।
 हर मन एकओ न भाओल, पढ़लि आन सौ आन ॥
 २४अछर अछर समुझाओल, हर कएल सुख जुवान ५८ ।
 तील कुष लय हेमत, हरवि कएल कन्यादान ॥

५० - आपक गति । ५१ - छाती मे । ५२ - पछताय । ५३ - काजर करत ।

५४ - सम्प्रारण ।

१ - (दू पति गौरी संवर में लेल गेल ।) २ - दू पति गौरीसंवर में लेल गेल ।

५२ - य कहत । ५३ - ऋषि । ५४ - तोरत ।

वेद पढ़ि लखा छिड़िआओल, मंगल आसल ।
वासुकि सभ बुलि छाएल, एकओ न राखल ॥
शिववत्स कवि गाओल, हर मन भाओल ।
गौरि उचित वर पाओल, सखि ससुलाओल ॥४१॥

देखल विकल सकल मन भेला ।
हर निअ रूप बइलि सब देला ॥
शङ्कर रूप जखन शिव भेला ।
सभ मन भेल चान्द उगि गेला ॥
कर गहि लेल शिव आदि - भवानी ।
लघु लघु चरन धरत बुलवानी ॥
हर वर देखि मनहि मुसुकानी ।
हरखित भेलि ३९ मनाइनि रानी ॥
मन गुनि शिववत्स पद भाने ।
शंकर छोड़ि मोहि गति नहि आने ॥४२॥

अनर ३९ केसरि हाथ सखि दस, निकट गौरिक जाय हे ।
मंगल गावि प्रसाहि ३९ गिरिजा, कोबर देल पहुँचाय हे ॥
सोस ३९ पट गोरि टारि राखल, भेल सगर हजोर हे ।
विन्दु सिन्दुर भाल ३९ राजित, उगल घुर ३९ जनि भोर हे ॥
लेल कय सिर माँग-टीका, ३९ परम राजित गोरि हे ।
हृय जटा मनिआर ३९ जागल, किछु गेल मनि चोरि हे ॥
ज्योति आनन ३९ जगत पसरल, जगज्योति भेल मलान हे ।
नयन हर ३९ सुर मलिन भय गेल, जाल मलिन भेल चान हे ॥

२५—महादेव । २६—गौरीक माय ।

२७—अगर ओ केसरि सुगन्धित द्रव्य । २८—प्रसाधित कय राजाव । २९—
मायक वस्त्र । ३०—कपार पर । ३१—सुर, सूर्य । ३२—मनटोका
माथिक महता । ३३—साप । ३४—नुहक उयात । ३५—महादेवक
आंखि मे रहनिहार देखता अग्नि ।

१—एतय सँ छओ पाँसी गौरीसंवर सँ लेल गेल ।

चिह्नुर ३९ चामर ललित वेणी, मृगमद ३९ सोभय भाल हे ।
नाक देसरि परम राजित, सोभए गले मनिमाल हे ॥
सरस अनुपम साजि रूपन, देसलि शिवसंग जाए हे ।
देखय आइकि रानि मनाइनि, हरख उर न समाए हे ॥
आदि भवानि जखन शंकर संगे, बैसलि कोबर जाए हे ।
शिववत्स भन चरन हृदय धरि सोभा बरनि न जाए हे ॥४३॥
खीरि रानि बुइ थार भरल गए, सखि मन परम हलास हे ।
चोक ३९ गुराय थार भुग ३९ राखल, बाइला तखन विलास हे ॥
४० महुअक करय बैसलि गए तोरित, गिरिनविनि सुलपनि हे ।
जौ एक वापक पूत सदाशिव, तौ भोर जितय भवानि हे ॥
गौरि गरास ४१ फेकल भव तोरित ४२, निअकर ४३ ते हलु सानि हे ।
विहुसलि बदन निहारि सखीमन, जितल सखी मन जानि हे ॥
शिववत्स भन चरन हृदय धरि, कोन गति जात वखानि हे ।
विहुँसि विहुँसि मोहि देखु अभय वर, शङ्कर सहित भवानि हे ॥४४॥

नीना ४४ सखनि सुलाइलि, ४५ बलि आइलि ।
जोगिनि जोग समाहि, बहुत संगे लाइलि ॥
कोबर जाय जगाय, तोरित हम मोहय ।
हर होएत गौरिक दास, तखन किछु कहय ॥
जोगिनि जोग लगाओल, देखल शिवस्वर ।
तेजल शङ्कर रूप, भयंकर भेष धर ॥
मुण्डमाल बचलाल, जटा सिर फूल ।
उमड़ल ४९ सुरगारि पाव, अंग भुषि भीजल ॥

३६—केस । ३७—कस्तूरी ।

३८—कोओ कय । ३९—दुइ मोट थारी । ४०—वर-कन्याक भोजन सम्बन्ध-
धी विधि । ४१—कथोर । ४२—सीध । ४३—अपना हाथे ।
४४—नीना नामक योगिनी । ४५—आदिके मिलल । ४६—मंशाक धार ।

फनिपति कर फुफुंकार, हरक डर जागल ।
जोगिनि बैसलि हिय हारि, जोग नहि लगल ॥
दुखमोक्षन गुन नाम, जोरित बुझ हरहु ।
जीवदत्त पद जान, हमर मन पुरहु ॥४२॥

देखल वरक सख्य, डरलि सभ माइनि ।
४३-जौखि जोगिनि मुख हेरल, रावि मनाइनि ॥
जोहित करव जगाय, हमर मन मानल ।
दूर होएत गोरिक दास, जोगिनि हम आनल ॥
४४-वस करि लभतह आय, जतेक दुरि बुलली ।
देखि डर हमर जगाय, सकल जोग भुलली ॥
नाना रहलि डरय, जोगबल हारल ।
बैसि सखीगत आए, सबहु हिय हारल ।
जीवदत्त पद जान, चरन शिव चित धरि ।
कहुल वचन एक गोरि, विनति शिव क ओड़ि ॥४५॥

४६-रहसि डोललि गोरि आजे ।
४७-छपि कहु शिवक समाजे ॥
मुअ गति बुझय न पारी ।
ई सभ नारि मगारी ॥
जौखि बैसलि सभे नारी ।
सखी सकल हिय हारी ॥
सुन्दर रूप देखाय ।
पुरिअ सकल मन आय ॥
तब तेज ४८-विकट सख्ये ।
फेरि भेल शङ्कर ४९-रूपे ॥

देखि हरखलि सभ नारी ।
हर राग राजकुमारी ॥
जीवदत्त पद भाने ।
राखि लेहु मोर माने ॥४३॥

नगरक नारि हकारि अनाओल, देखय शिवक परिहासे ।
बैसलि राजकुमारि शिवक संग, सखि मन बाढ़ हुलासे ॥
कोधर गोरि राग शंकर बैसल, परम सोहाओन लागे ।
देखि हरखलि भेलि रावि मनाइनि, जानि अपन बड़ भाजे ॥
देखि सख्य काम ५०-कोटि लज्जित, शोभा धरनि न जाये ।
निरखि सखी मन हरय जुड़ावल, सखि सुन्दर पति पाय ॥
जीवदत्त भन चरन हृदय धरि, छवि वरनय के पार ॥
५१-तगि सखी सभ प्रेम बढ़ावए, करि करि जतन हजार ॥४४॥

जनु देखू कोबर सुख जाय कए ।
सखिगत गावय सधुर धुनि मंगल, शिवक चरन मनाय कए ॥
कौशल चालि चलत शिवशङ्कर, सुन्दर सीस ५२-नवाय कए ।
हरखिल चरन धरत धरणी पर, गिरिभद्रति संग जाय कए ॥
दाँच वयन तिन नयन विराजित, सखि ५३-सिर तिलक बनाय कए ।
कय परिहास आय मन पुरहु, सखि मन प्रेम बढ़ाव कए ॥
तोहर चरण सेधि ई नति हमर, ते मन रहिअ लज्जान कए ।
जीवदत्त भन हर शरनागत, मोहि उबारहु आय कए ॥४५॥
जनु देखू जनीआ ५४-बोरी ।
कय परिहास सखीगत आइलि, बैसलि शिवक संग गौरी ॥
हुलहिनि गाय ५५-मुठी कय बैसलि, हसलि सखी मुख मोरी ।
उप ५६-उपवीत गोरि कर आएल, बलसे ने हर ५७-बछोरी ॥

४३-पछताय । ४४-अपना अधीन कय ।

४५-एकाग्र भे । ४६-मुकाय के । ४७-त्यागल । ४८-भद्र रूप ।

४९-नङ्गो कामदेव । ५०-आनन्दित भय । ५१-गाय झुकाय ।

५२-गाय पर चम्पकाके । ५३-वरक छाड़ल जनउक चोरएवाक विधि ।

५४-मुठी कसि । ५५-छाड़ल जनउ ।

देखि परिहास दुहु मन हरषित, हर-गिरिराजनि सोरी ।
 शोभा एहन बजानि सकत के, सभ उजवा जहि सोरी ॥
 शङ्कर दीनदयाल सदा भय तोरित पुरह मन मोरी ।
 शीवदत्त भन चरन हृदय धरि, हम सारनागत तोरी ॥१०॥

वर देखन सखीगन आऊ ।
 निअ ६९वर मुन्दरी पलंग पर छेड़ति, हँसि हँसि रंग लगाउ ॥
 निअ तनु गारि देति सभ सखीगन, हर सब प्रेम बढ़ाऊ ।
 सभ सखि विविध कुसुम केर माला अपने हाथ बनाऊ ।
 कय परिहास गौरि शङ्कर सँ, दुहु दुहु हुनि पहिराऊ ।
 शीवदत्त भन करन हृदय धरि, कोबर संगल गाऊ ॥११॥
 गौरी शंकर आनि वैसाओल, चामन चरन उझारि ।
 झोनि १००तमारि हाथ करि दिन्हो, वचन मुनिअ १००तुप धारि ॥
 एकर भेड़ १००बनाविअ शङ्कर, नहि तँ सखी देति गारि ।
 तेहि नपे भेड़ बनाय सदाशिव, देल जीव तहि डारि ॥
 उल्लिल उल्लिल भेड़ रंग लगावत, पृथल सखीगन झारि ।
 हर मन प्रेम उमग जव बाढ़ल, देखल तखन सभ नारि ॥
 १००वरगनि भय देवि ! देहु अकय वर, हेमगिरिराजकुमारि ।
 शीवदत्त भन चरन हृदय धरि, शङ्कर लेहु उबारि ॥१२॥

॥ समाप्त ॥

- ६० - महादेव जोड़ लगाइयो के मुट्ठी नहि खोलि सकलाइ ।
 ६१ - अपन हाथक मुद्रिका (ओंटी) । ६२ - बिलास लीला ।
 ६३ - जजोर कपड़ा समेटि कय शंकरक हाथ में देल । ६४ - राजा हिमा-
 लयक पुत्रीक वचन सुनु । ६५ - भेड़ा । ६६ - प्रसन्न ॥



गौरीप्रणयक परिशिष्ट

कवि शिवदत्तकृत

१ - गौरीसंवर (गीतकाव्य)

ई गौरीविद्याह-सम्बन्धी १४ गीत गीतक कमबख्त संग्रह थिक ।
 एहि में केवल चारि गीत गीत छोड़ि सकल गीत गौरीप्रणय वादकेक थिक ।
 अतः एतय केवल चारिये टा गीत प्रस्तुत अछि । शेष गीत नाटके में
 अछि । सबक विवरण प्रस्तुत अछि:-

गौरीसंवर गीतसं०

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५

गौरीप्रणय गीतसं०

६ सँ ११ धरिक भाव
 १२ सँ १६ धरिक भाव
 २० (समान)
 २४ (समान)
 २७ (समान)
 २८ (समान)
 २९ "
 ३४ "
 ३६ "
 ३७ "
 ३८ "
 ४१ "
 ४५ (अभाव)
 ४६ (समान)
 ४७ एवं ४८ (भाव)

प्रस्तुत गीत में गौरीसंवरक संग्रह देल अछि । शेषगीतक पाठाक्षर
 नाटके में यथास्थान निविष्ट अछि ॥

१

मृगछाल भाल लय चललि सुन्दरि, वैसलि जाए मसान रे ।
 शिवचोकर एहि जगत पाविष, मन करिय हहे ध्यान रे ॥
 कठिन तप कयल घरख वारह, बीहि परसन भेल रे ।
 अति भयलुर देव शङ्कर, आए दरसन देल रे ॥
 बिहूँसि शङ्कर वचन बोलय, दैत मन बहलाय रे ।
 कुल-मुल परिजन एको न धिक्कन्हि, कोन गुन करब जसाय रे ॥
 बृद्ध दोष सभ गूढ़ अधिकन्हि, बसधि खतत मसान रे ।
 हरक निम्बा गूनि गिरिजा, तेजय चाह परान रे ॥
 परम रोषित नीरि मन भेल, कहय सखि-मुखा हेरि रे ।
 कहाँ सँ आएल बिकट जोगी, कहहु जाओ गृह फेरि रे ॥
 वचन सुनि हर बिहूँसि बोलय, शङ्कर धिक्क मोर नान रे ।
 ऊठि निजगृह जाहु सुन्दरि, पुरज सभ मनकास रे ॥
 हर वचन सुनि तोरित ऊठि, पुलकि चललि भवार्ति रे ।
 चरन। मन दय इहो उबरत, शिवदत्त कवि वानि रे ॥१॥

२

गंग नीर सरीर भीजल, भाल भसभ विपुण्ड रे ।
 अएल ध्यान मसान दांकर, कर माला लय मुण्ड रे ॥
 सकल देव भक्त साधि आएल, हरि सौं कएल बिचार रे ।
 बैकुण्ठ संपन्न हर दिगम्बर, ध्यान तोड़ण के पार रे ॥
 सेवक नन्दी असंग लावधि, दूत भूत सभ सज्ज रे ।
 भानि धूमर आक भोजन, ध्याल भूषित अङ्ग रे ॥

१—विघाता प्रसन्न भेलाह । २—गुप्त दोष सभ छति ओ बृद्ध छधि ।
 ३—प्रसन्न भय । ४—मंगाक जड स । ५—सभ देवता एक मत कया ।
 ६—विघणु सौं । ७—याप सँ सजाओल ।

१—हर चरन मत ।

अधाराणि गत हरि^१ वचन बोलय, मदन १०सर जी^२ लाग रे ।
 तीगि दूग ११हर अवेशि १२राखय, तेहि परि से जाग रे ॥
 देव सभ हरिवचन मानल, कीड १३मममति कोन्ह रे ।
 ब्रह्मा १४सुत हुन हार भेजल, मदन १५जान तय कीन्ह रे ॥
 अथन सुनि १६मने, तोरित ऊठल, चलल मदन दल साजि रे ।
 शिवदत्त नाम दल जे प्राण्य, तन १७तन मदन विराजि रे ॥१॥

३

गहि लेल मोनि कन, चलल दिगम्बर रे ।
 आगे माइ, तखि देल शिम्भुर धार, चलल हर कोबर रे ।
 जान तिलक १८लोने, छोडि १९काम मोहै रे ।
 आगे माइ, जान २०अरुन छपि जाए, चलल शिवशंकर रे ॥
 गुहार २१पुरन्दर, दैवदत्त सुन्दर रे ।
 आगे माइ, गलि शोभे रुद्रमाध, बाव छाक ऊपर रे ॥
 गोरि पदम्बर, २२हर काँ वधम्बर रे ।
 आगे माइ, गेट २३जोड़ि चललि भवार्ति, हंसय सभ सखिगन रे ॥
 शोवदत्त भन, हर पद अए मन रे ।
 आगे माइ, पुटहु मनोरथ मोर, कि हरलि दिगम्बर रे ॥२॥

४

मनुष्यक करय गोरि २४ हर, से वर धर रे ।
 तनि २५जोग २६बताओल, हंसय दिगम्बर ॥

१—विचारि । २—विघणु । ३—कामदेवक बाण । ४—आलि ।
 ५—छोला । ६—निश्चित । ७—तारक के । ८—कामदेव ।
 ९—जान सँ सुनि । १०—सभक देखे मे । ११—चन्द्रमा तिलकक रूपमे ।
 १२—कड़ोरो कामदेव के । १३—चन्द्रमा ओ सूर्य धधि जाइत छधि ।
 १४—अष्ट पुत्र, पुत्र मे इन्द्रवरुण । १५—रेशमी वस्त्र । १६—वन्धन
 (पुरुषक वस्त्र हस्तीक साड़ीक छूट मे जानिह) । १७—गोरी ओ
 महादेव । १८—भीत विक्षेप ।

देखि देखि झुरि २३ मनाहनि, सख भाइनि हे ।
 सख मिलि हलक विचारि, धुलहुँ २४ मुखपाहनि ॥
 आइ २५ खीरि उपेखल, धिप भयल २६ हे ।
 भाँग अएलनि शिव भाग, सखी दस देखल ॥
 चोरज धरहु सखी मत, जाएय कामक देस हे ।
 जय जोग २७ हम परमाशय, मोहित होएत महेश ॥
 मोना हमर नाम धिक, एहि अंग के नहि जान हे ।
 गोरिके देख सोहाग, कि शिव कह, २९ बर भोजन ॥
 जोगिनि कसैक जतन अय जोग परमासल हे ।
 हर नहि भेल जोग बस, एकओ न लागल ॥
 शिवदत्त कवि गाओल, हरचित लाजाल हे ।
 गोरि उचित बर पाओल, संगल गाओल ॥

२६—अतिकुची । २७—गोरी दुल पओओहि । २८—सक्कर ओ खीरक
 उपेक्षा कयल । २९—भक्षण कयल । ३०—ताम्रिक प्रयोग ।
 ३१—शिव कहयनि जे गोरी थड़ जानो छवि ॥



श्रीः

परिशिष्ट

२

कवि शिवदत्त कृत

सीता - संवर

(लघुकाव्य)

सम्पादक

डॉ० अश्विनाथ झा विद्यावाचस्पति



कामेश्वरसिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभङ्गा

श्रीः
कवि शिवदत्तकृत
सीतासंवर

प्रथमहि प्रथमि सरस्वति माता, एकर करहु निवाह ।
शीघ्रवत् कवि ऊचर धानी, सीताराम विवाह ॥१॥
सेवक जन पाठक, सोनित सखि, कालक हरन गनेस ।
ललित दन्त गुणमन्त सप्त मोहि, देहु नुनति उपदेस है ॥२॥
मैथिल देश नरेस जनक महर्षि, शङ्कर सेवा किम्ह ।
हेलि शङ्कर मन हरल उपजल, सुपति सरासन दीन्ह ॥३॥
राखि सरासन जनक रोखि नृप, आन गए असनान ।
गृह पोतन गइ जानकि वारी, कर गहि राखिन बान ॥४॥
जनक रोखि गृह आए जे पहुँचल, मन मह हलल विचारि ।
कोन देसक भूपति गृह आएल, दियो सरासन टारि ॥५॥
विहसि होलहि तब जानकि वारी, सुनहु ववा मोर बात ।
हम उठाए चौका किआ, कि पूजा कारन तात ॥६॥
वचन नुनि मन तोरित उठल नृप, संसति पुरिनि जमाव ।
चापि करत बान जे लोड़व, सो रतन कन्या पाव ॥७॥
सभा मण्डित पण्डितमन आएल, जनक कठिन प्रन किम्ह ।
प्राप्ती विरचि विरचि निरमाओल, दूत हाथ कए दीन्ह ॥८॥
लए पाता समय देन देस गेल, नेओतल सकल संसार ।
कर्मभयन पाताल जे नेओतल, स्वर्ग देखलोक द्वारि ॥९॥

१-सरस्वति = धनुष । ४-पोतन = मोचन । ५-वारी = वालिका ।
६-चौका = टाँडो (पीरीप्रणय गीत-४४) । ७-चापि = धनुष पर हाथ सँ ।
८-रतन कन्या = लक्ष्म्यारत्न सीता । ९-प्रन = प्रसिद्ध । पाप्मी = पाप्मा,
बोडो ।

भुवन भुवन सभ राज जे तेओतल, गृह आएल बूधराज ।
 एक देश दुज भूजि जे आएल, दशरथ मय निज राज ॥१०॥
 राम लछमन दुहु भैया बैसल, पड़थि गुरुक घटि सार ।
 सभ देखक सभ बीर जनकक पुर, दुहु मन करम बिचार ॥११॥
 राम लछमन दिहु संमति कय मन, गुरु सँ पुछल गए बात ।
 हसहु जनकपुर देखन जाएथ, जओ गुरु कलि मोर साथ ॥१२॥
 विश्वामित्र बचन एक बीलय, मन दय मुनु मोर बात ।
 दानव देश बीरमन बैसत, परम होएत उत्तमात ॥१३॥
 किहुसि बोलहि दशरथमुत नन्दन, जनु गुरु मन हविआए ।
 सुर नर मुनि देव दानव दल पैसि, तोड़व धनुष हम जाए ॥१४॥
 पकर कठिन सरासन हरको, देखहत विकट सख्य ।
 बैसक थोड़ कुसल तेन देखइत, सहुजहि बालक रूप ॥१५॥
 परगुप्त छत्री सभ सारल, से जय के तहि जान हे ।
 सेहओ जनकपुर देखन अओताह, के जन हरषिन प्राप्त हे ॥१६॥
 विश्वामित्र मन छोट न किजिए, आशिष दिअ मोहि आज हे ।
 के बीर आज सरासन सोइत, देखओ जनक रिषि राज हे ॥१७॥
 कतेक जतन गुरु वचन सभ मानल, चलल जनक रिषि घाम हे ।
 विश्वामित्र लखन छोट चललाह, आशेष चले श्रीराम हे ॥१८॥
 दानव देश नर नृपति सभ, धनुष देखि मन घाम हे ।
 चलहु चलहु गुरु देखन जाऊ, आज जनक रिषि घाम हे ॥१९॥
 माथे मटक तिलक वनगाला, तन दुति सुन्दर स्वाम हे ।
 लछमन साथ चले रघुनन्दन, निरखत अति अभिराम हे ॥२०॥

१० - दुज = द्विज, थोड़ो लय रेनिहार आहाण । १२ - दिहु = निश्चय ।

१४ - दशरथसत = आनन्ददायक दशरथक पुत्र । १५ - सरासन हर = महा-
 देवक धनुषी । को = के व्यक्ति । १६ - जनक रिषि = राजपि जनक
 निश्चिन्त । २० - मटक = मुकुट ।

आएल नगर निकट रघु-बाम्भव, फुलवन खेल विश्वराम हे ।
 गोरि पुजत गृह सँ सिध निकसल, देखल नयन भरि राम हे ॥२१॥
 देखि कुम्भर सिध सखिमुख हेरय, वरति खसकि मुखछाय हे ।
 सेहि तओ जियो रघुवर वर पाऊ, तहि तओ मरओ विप्र खाय हे ॥२२॥
 सखि दुष्ट चानन वृष्य लगावए, शितल सिधय तयन नीर हे ।
 बीरज धन मन जानकि बारी, नाह मिलत रघुबीर हे ॥२३॥
 सखि मुख हेरि जानकि मुख बोलय, तहि सखि मन प्रतिवाए हे ।
 एतेक बीरगन हारि जे बैसल अल्प वएस दुहु भाए हे ॥२४॥
 सुमरि सुमरि कहू जानकि बारी, बैसल मन हिअ हारि हे ।
 जओ नहि टुटल सरासन हरके, तओ हम रहय कुमार हे ॥२५॥
 तोहर विवाह थोहि जओ बीखल, दूत सरासन आज ।
 सीतहि राम-वचन वर भीलत, राजन जनकपुर आज ॥२६॥
 राम लखन अब धनुष निकट गेल, हँसथि भूपतिगण साथ ।
 मोट धनुष छोट कर बालक, ओटति कि गुन विधि हाथ ॥२७॥
 चौदस हेरि हेरि लखन कुमार बोल, सुनहु बवा मोर बात ।
 चापि कर हम जान जे तोड़व, हुकुम करिअ रघुनाथ ॥२८॥
 मन गुनि बात बोलय रघुनन्दन, कोन पर होएत निवाह ।
 गेठ रहैत बात जओ तोड़व, तोहरे होएत विवाह ॥२९॥
 दशरथ सुमरि, गुरु गुन गाओल, धनुष छबल रघुनाथ ।
 टुटल गर्व भूपतिजन सबहुक, धनुष कएल बस हाथ ॥३०॥
 देखि जानकि मन हरष उपजल, अब पद दृढत कुमार ।
 टुटल धनुष भेदनि घहराइलि, सबद जगत परचारि ॥३१॥
 सोलह इन्द्र इन्द्रासन बोलय थासुकि काय पताल ।
 तीनि भुवन लोक कायन लागय, कायन दसओ दिगपाल ॥३२॥

२१ - तन दुति = सरोरत कान्ति । अभिराम = सुन्दर । २३ - नाह = स्वासी ।
 २४ - अल्प वएस = कम अवस्था । २५ - सरासन = धनुष । २६ - थोहि =
 विधाता । २९ - भेदनि घहराइलि = बृद्धो कबड कय उठलि ।

प्रनुष तोड़ि सभ बीर छोड़ाओल बाजत जनकपुर बाज ।
 चलत अवधपुर दसरथ नन्दन राखि जनक रिखि लाज ॥१४॥
 टटल धनुष सुनि कोपित भव मन, तोरित आएल परसुराम ।
 बाढ़ बार छत्रियन सोधल, कहाँ सँ आएय श्रीराम ॥१५॥
 फहसा लय कर गार गार बोलस, पहुँचल तोरित रोखाए ।
 कटुक वचन पट भाखन लागस, लछुमन गेल अकुलाए ॥१६॥
 हुकुम करिअ रघुनन्दन मो सखी ओहि गारवहम आज ।
 छैनहु छैनहु कोय लछुमन आता बोलस मुख महाराज ॥१७॥
 विग्रह सुनि सुर मुनिगन आएल, लागल कहए विचार ।
 रावन मारन शत्रुसंहारन राम लेल अवतार ॥१८॥
 कोपित भए रघुनन्दन मन मन, रोकल स्वर्गक आस ।
 मतिक छोन होइहह रघुवधन लेव जवे वनवास ॥१९॥
 जनक रीखि निजराज तेज चललाह, राजचन्द्र महाराज ।
 विश्वामित्र लखन छोट चललाह, नीज अवधपुर राज ॥२०॥
 नेल अवधपुर दसरथ-नन्दन दसरथे लेल जुमाए ।
 निजसुत देखि मन हरष पवजल, पुलकि कौशल्या माए ॥२१॥
 बदल निरखि जुमलोवन जुड़ाएल पुछए लागल सुन तात ।
 कोन बिधि टटल सरासन हरके, तकर कहहु किछु बात ॥२२॥
 सुर मर देव दानवमन बैसल, धनुष छुव्य नहि हाथ ।
 हम तोड़ल सरायन हरके, तत धरम मोर साथ ॥२३॥
 निजसुतवचन सुनल नृप दशरथ, हरखित मन मन भेल ।
 जत तप पुरिष जनम हम कएल, एहन सुत बिहू भेल ॥२४॥
 दसरथ नृप बरिआत जे साजल चलल जनक-रिखिराज ।
 ऊधवघात मंगल सभ नावए, बाजत चौदिस बाज ॥२५॥

१२—रोखाय = रोषित (क्रुद्ध मन) १३—विग्रह = लगड़ा ।

१६—नीज = आन । १७—जुमाए = जुमाओन कराय । १८—बिहू = विधाता ।

बाजत मृदंग ड पवंग सुर, तुरही अओ करताल ।
 झोलक मजीरा दोतारा चितारा, सारंगी कठताल ॥२६॥
 कोटि कोटि दल बाजत तगारा, नकि-बेहो कएल रनघात ।
 कोमिका हिय हरष जुड़ाएल, निरखि निरखि बरिआत ॥२७॥
 कैओ कोटि हाथि पर होव, घोड़ मनष के पार ।
 राम लखन साजल नृप दसरथ, साजल धरम कुमार ॥२८॥
 पीताम्बर मकराकृति कुण्डल, माथे मटक बनमाल ।
 तन दुति स्याम घटा घुमि आएल, जलधर लाओल जाल ॥२९॥
 कमल नयन करकमल विराजित, चरनकमल अश्विराम ।
 हरखि हरखि पुनु रानि कौसल्या, चलल चुमावए राम ॥३०॥
 लघु लघु चरन बलिध रघुनन्दन, चढ़ल रथ पर जाए ।
 हीरा लाल जमाहिर लागल, सोभा बरनि न जाए ॥३१॥
 नगर निकट बरिआत जे लागल, परिछव सखि सभ भेलि ।
 निरखि सकल रूप देखि छुबुबलि, मोहिनि सभ मन भेलि ॥३२॥
 निर सँ मटक, जे काख दवाओल, शिम पटका कर लेल ।
 लघु लघु चरन दैल रघुनन्दन, माड़व भाजि दैल ॥३३॥
 दसरथ—नन्दन विभूवन-वन्दन, चलल सीस नचाए ।
 कनैक जतन कथ सीय उठाओल, दैल अंगुरि लमाए ॥३४॥
 दसन दामिनि जोति पसरल, आनन चान समान ।
 चिकुर चामर ललित बेनी, भेस के जग जान ॥३५॥

२६—तुरही = पिपही । २७—रनघात = उपयुक्त तगाड़ा पर थोट । २८—
 घोड़ = घोड़ा । २९—मकराकृति = मालक आकारक । तनदुति = देहक कांति
 सँ । घटा = मेधाङ्गवर । जलधर = रोष ।

३०—काख दवाओल = दोपटाक एक छोड़ के काखतरे दाबि कय ? शिम =
 गरदनि परक । पटका = दोपटा । कर = हाथ सँ । भाजि = घुमलाह ।
 ३१—दसन दामिनि = दासकामी बिजुरी । चिकुर चामर = कैशकपी खेंबर ।
 ललित बेनी = सुन्दर जुड़ी ॥

कीर नासा अधर मधुरी, भृकुटि कुटिल कमान ।
 प्रेम सरजुग बन्धलि विराजित, नयन सरोज समान ॥१३॥
 पीन पयोधर उपर सुन्दर लङ्का केहरि समतूल ।
 कदलि बन्ध जुग जंघ विराजित, चरन कमलक फूल ॥१४॥
 कर कंगन, भुक्त ठाड़ विराजित, मोतिनि मांग विराज ।
 घन रत्ने घुघुर नेपुर घन बाजय, कटि फिकिति घन बाज ॥१५॥
 परम राजित मांगटीका, मृगमद सोभे भाज ।
 वेसरि बाजबन्द विराजित, सोभित मले मनिमाल ॥१६॥
 रचल पाति जइवक टीका, जानकि के छवि छाज ।
 सीता राम उचित जुग मोलल, बाजन चौदिस बाज ॥१७॥
 अंगुरि लगाए चलल सिरि रघुवर जानकि जतन उठाए ।
 सिन्दुर छार देल तब सखिनन, सोभा वरनि न जाए ॥१८॥
 कन्यादान कणल जे जनक रिखि, सुर मर मुनि घए साखि ।
 रामचन्द्र हस्तोदक लए हलु, स्थस्तिवचन हलु शाखि ॥१९॥
 ब्रह्मा पोधी लव कर बेसल, आवधि वेदविधान ।
 कर पर सिन्दुर जोति मलिन भेल, जब भेल सिन्दुरदान ॥२०॥
 बेदी उपर शेल सिरि रघुवर, कर महि लवा छिड़िआव ।
 रती कामदेव युग मिलि आवधि, सेहओ हन नहि पाव ॥२१॥

- १३ - कीर नासा = शृङ्गाक समान नाक । अधर = ठोर ।
 भृकुटि कुटिल = टेढ़ा भौंह । बन्धलि = सिरा, नय । सरोज = कमल ।
 १४ - पीन = पुष्ट । लङ्का = डोर । केहरि = सिंह । कदलि = केराक ।
 १५ - ठाड़ = बाजबन्द, ताड़ ॥ १६ - राजित = सोभित । १७ - मांगटीका =
 माथक गहना मनटीका । मृगमद = कस्तूरी । भाज = कपाड़ पर । वेसरि =
 नाकक गहना ॥ १८ - पाति = बाहिक गहना विशेष । जइवक = ॥
 १९ - जनक रिखि = राजपि जनक । साखि = साखी । हस्तोदक = हाथसी हाथ
 से जल दय दान करय । स्थस्तिवचन = स्वीकारोक्ति ॥
 २० - रती = रति (कामदेवक स्त्री) । युग = जोड़ी ॥

तरन पयोधर तन दुति सुन्दर, सोभा श्वभ नपार ।
 आगौं ठाड़ि शक्तिनि सम जानकि, वरगय के जग पार ॥२४॥
 जानकि-राम ठाड़ बेदी पर आभा एहन ई भेल ।
 पाजोस अमावस सघन निसि, चान किशुं उमि भेल ॥२५॥
 सीता संवर पहि जस भावत, मन दय जे जन गाव ।
 शीवदत्त भन चरन हृदय घरि, भुक्ति मुक्ति बड़ पाव ॥२६॥

॥ सीतासंवर समाप्त ॥

- २४ - पाजोस = वर्षा ऋतुक । निसि = राति मे ॥

श्रीः

३

कवि शिवदत्त कृत

दुर्गाविजय (गीतकाव्य)

[आदि सौ गीत सं०--२५क पूर्वार्ध भरि खण्डित गीत काव्य ।
दुर्गास्तशतीक भावानुवाद । गीत सं० ३६ मे 'दुर्गाविजय'
नामक उल्लेख । अन्तिम गीतक बाद मूल पोथी मे समाप्तिक
चिह्न । प्रथम बेर प्रकाश मे आयल ।]

सम्पादक

डॉ० लक्ष्मिनाथ शर्मा विश्वाचार्य

... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..
... ..

पौच वदन तिनि नैन विशाल^१ ।
सुन्दर तिलक शोभए शशि भाल ॥
शिवदत्त भन मन अनुमानि ।
देहु वरन शरणागत जानि ॥२५॥

१—सुल पोथी मे एहि सौ बहिलुका पत्र हेराय गेल छेक ।

दुर्गाविजय

१२९

हरि नित्य शक्ति^१ तोरित लए आएल,
गुहक पिठि असवारी ।
भाधे मटुक तिलक वनमाला,
शोभए भुजा भल चारी ॥
मणिमय मकर^२ मनोहर कुण्डल,
पीत वसन तनु श्यामा ।
मदा पवा कर बंख विराजित,
चक सुदर्शन नामा ॥
कमल नयन कर कमल विराजित,
चरन कमल अभिरामा ।
शिवदत्त भन चरन हृदय धरि,
पुरह हमर मन कामा ॥२६॥

ब्रह्मशक्ति जे चहुँप आइलि, हंसयुक्त विमान यो ।
कमल आसन देखु सुन्दर, शोभए कुण्डल कान यो ॥
चारि मुख तह वेद बाँचधि, पीत वसन विराज यो ।
कुश कमण्डलु दण्ड लय कर, चललि दैत्य—समाज यो ॥
दृग लाल परम विशाल शोभित, मुकुट सुभग समारि यो ।
मिचत जल रण फिरहि चौदिस, शोभए भुज भल चारि यो ॥
शरण कए मन मोर सिरजल, जगत गति नहि जान यो ॥
काहि से मन विकल कएलहु, शिवदत्त पद भान यो ॥२७॥

आइलि रूप कौमारी ।
प्रदमुख हँसल निहारी ॥
शिलि पिठि चढ़ि असवारी ।
निश कर खड्ग उपारी ॥

१—नित्य शक्ति = निज शक्ति । २—मकर = माछ सनक सुन्दर ।

गुड्ड कएल अति भारी ।
वरनए के जग पारी ॥
शिवदत्त हितकारी ।
तोरित नेक बेहारी ॥२५॥

इन्द्रक शक्ति तुपाइलि रे चढ़लि गजराजे ।
मएन हजार निहारल रे रनभूमि समाजे ॥
बख अरुण कर सोभत रे देखु सुभग शरीरे ।
जलधर साजि चलल सड़ रे जहाँ दानव धीरे ॥
सिर पर छव विराजित रे गल गणिमय हारे ।
थिकि पुनु अमर सकल गति रे वरनए के पारे ॥
कए मन गोप चलिनि अब रे रनभूमि पयाने ।
भगवति चरन सरन धरि रे कवि शिवदत्त माने ॥२६॥

नरेश्वरि शक्ति चलल रन रे वरनए के पारे ।
तीनि भुवन सभ जानत रे बल अगम अपारे ॥
आध सरीर केहरि खन रे आधा नररूपे ।
देव सकल सभ दानव रे अष्टदूद सरूपे ॥
देखल दसन भयानक रे नख परम विशाले ।
चलत धरणि डगमग कर रे कापय दिगपाले ॥
कय बल दाग चललि अब रे रनभूमि पयाने ।
भगवति चरन सरन धरि रे कवि शिवदत्त माने ॥२७॥

आइलि शक्ति बगल के रन, देखि गिरिसम देह ओ ।
कण्ठ बाल विशाला करकत, चशलि दानव-गेह ओ ॥
अरुण सफल सैभारि दोइल, बेरि दानव आए ओ ।
सारि युगल निकास के रन, देल दत्त विहराए ओ ॥
भेल अब संश्राम भारी, बाजत चौदिस बाज ओ ।
आएल सभ मिलि सकल दानव, रक्तबीज समाज ओ ॥

आए गकल समाज दानव, भेला सम्मुख ठाढ़ ओ ।
अरुण वर्षा करहि प्रगुपति, पड़य दानव नाड़ ओ ॥
अम्बिके गिरिसम नन्दनि । तुअ चरन चित लाय ओ ।
शिवदत्त मन पुरह भगवति, तोरित होहु सहाय ओ ॥२८॥

रक्तबीज विशाला अतिबल, आए घेनल अम्बिके दल,
इगहि दस अवतार खला-खला, देखि धरिबल हे ॥
कयल काली कोप अपारे, चलात महि नहि थमहत भारे,
चरन महि मह धरयन पारे, जग अधारे हे ॥
भेला शक हर प्राण काड़ी, तामु उर पर भेलि ठाड़ी,
भेल रन भरि रसन बाड़ी, दशन काड़ी हे ॥
तीख खड्ग उपाड़ि कर गहि, अम्बिके रन मारहि बहि जहि,
कालिके गहि धार तहि तहि, अधिर पीवहि हे ॥
अम्ब दस कर लख समारल, तोरित दानव जाय मारल,
धार शोणित गिरय न पारल, अरि संहारल हे ॥
शिवदत्त मन चरेन मन दय, आव किए बेड़ि भेलिह निरदय,
लेह तोरित उबारि मन दय, मोहि सदाय भय हे ॥२९॥

दसविध धरि अवतारे ॥

कयल गुड्ड अपारे ॥

पिबय अधिर गहि धारे ।

भूमि पड़य नहि पारे ॥

रक्तबीज हनु मारी ।

कयल अमर हितकारी ॥

शिवदत्त पद माने ।

गुअ छोड़ि गति नहि आने ॥३०॥

रक्तबीज रण मारल रे सुनल नृप-गुम्हे ।

तोरित गरजि रण आएल रे अब देखि निगुम्हे ॥

घर बरपन करहुते रन रे बहुत चल गए जाए ।
निज सब ते घर कटहुते रे देवी रन गहु आए ॥
मारल ग जि महासुर रे नहि भेल बिलम्बे ।
तीनि भूवन सभ हरषित रे जीतल जगदम्बे ॥
कए मन ध्यान जननि पद रे शिवदत्त पद गाये ।
तीरित अभय वर दय मोहि रे मन पुरह आवे ॥३५॥

वरम भयातक दानव वीर ।
आएल शुभ महा रनवीर ॥
कए मन कोप चढ़ल रथ आज ।
कापए धरति सहित गिरिराज ॥
मद मातल भुज परम विशाल ।
कोपित बदन दगन अतिलाल ॥
कहए महासुर सुनहु भवानि ।
अनके बल जितलहु रन आनि ॥
शिवदत्त शरणागत जानि ।
तीरित मनोरथ पुरह भवानि ॥३५॥

गिरिनन्दिनि बोलल एक गौर ।
तीनि भूवन एक हमर सरीर ॥
सिंह चढ़ल एकसरि भेल ठाढ़ि ।
नेल सरीर जगत भरि बाढ़ि ॥
लैल समेटि तखने सभ रूप ।
जोनिनि समाए गेलि रौमकू ॥
एकसरि भय कर अस्त्र प्रहार ।
तखन युद्ध भेल अगम अपार ॥
भारि महासुर दानव भूप ।
लेलत रन मह आदिसरूप ॥
शिवदत्त भन सुगरि भवानि ।
देहु सरन शरणागत जानि ॥३६॥

भेल निपात असुरगण आज ।
सभ देव आएल देवि समाज ॥
तीनि भूवन गति आदि भवानि ।
सभ मन हलल दीढ़ कए जानि ॥
तोहर चरन जग सकल अधार ।
तोहे देवि हरलहु भूमिक भार ॥
तुअ पद सेवि पुरल मन आस ।
देव सकल मिलि पाओल वास ॥
देवलोक पद करत बखानि ।
शिवदत्त वर देहु भवानि ॥३७॥

अगर सभ मिलि कहए लागल,
तोहर पद सेवि दुख भागल,
दुष्ट दानव सकल मारल,
जगत तारल हे ॥

सगुण निर्गुण देह धारिनि,
जगत के उत्पत्ति कारिनि,
दुख दुर्गति सकल नाशिनि,
विन्ध्यवासिनि हे ॥

जतेक नर मुनि देव देवा,
सकल तुअ मिलि करत सेवा,
जगत मह देवि एक तोहर गति
मातु भगवति हे ॥

शिवदत्तक विनति थोड़ी,
आब किअए देवि भेलिहु भोरी,
तीरित मन अब पुरह मोरी,

गिरिकिशोरी हे ॥३८॥

अगर सकल तप करत अहोनिषि, से देखि बोलल भवानि ।
जे करहुत छुट सकल पराभव कहल बचन अनुमानि ॥

अगर गुगुल धूप दीप घूमन रस, करत प्रेम करि पूजा ।
 दुज-भोजन बलि होय अहोनिशि, ताहि बहिन दस भुजा ॥
 "दुर्गाष्टोत्तम" सुतत जे गावत, पुजय चरन चित लाइ ।
 नाशय तकर परम दुख दाहण, संगल देव बड़ाइ ॥
 तोह जगजननि ! जगतदुखनाशिनि, तीनि भवन सुखदाता ।
 शीवदत्त द्विज आए उबारह, बिसरि हलह जनु माता ॥३१॥

ई सभ सकल बुझाए कहल ऋषि,
 सूनह सुरथ महाराजे ।
 सुरथ - समाधि दुह मन मानल,
 पुजय चलल सद आजे ॥
 अगुलि भगति कए चरण अराबल,
 बीसल ध्यान लगाए ।
 अपन गत बलि काटि चढ़ाओल,
 अहोनिशि सेबल जाए ॥
 सेवइत चरण वरख तिति बीतल,
 परसनि भेलि भवानी ।
 मन इच्छा बर देल गोसाउनि,
 पुरल मनोरथ आनी ॥
 देवि चरण सेवि भेल सकल सुख,
 पाओल सुरथ निज राजे ।
 शीवदत्त मन तोरित पुरह देवि !
 राखु सरन केर लाजे ॥३२॥

★ समाप्त ★